

Campus	Ahmedabad	Submission Date	17.4.25
Name of student		Class	X
Worksheet	3	Student Roll No.	
Subject	Hindi		
Session	2025-26		

मीरा के पद

हरि आप हरो जन री भीर।
 द्रोपदी री लाज राखी , आप बढ़ायो चीर।
 भगत कारण रूप नरहरि , धरयो आप सरीर।
 बूढ़तो गजराज राख्यो , काटी कुञ्जर पीर।
 दासी मीराँ लाल गिरधर , हरो म्हारी भीर।।

हरि - श्री कृष्ण

जन - भक्त

भीर - दुख- दर्द

लाज - इज्जत

चीर - साड़ी , कपडा

नरहरि - नरसिंह अवतार

सरीर - शरीर

गजराज - हाथियों का राजा ऐरावत

कुञ्जर - हाथी

काटी - मारना

लाल गिरधर - श्री कृष्ण

म्हारी - हमारी

व्याख्या :- इस पद में कवयित्री मीरा भगवान श्री कृष्ण के भक्त - प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि आप अपने भक्तों के सभी प्रकार के दुखों को हरने वाले हैं अर्थात् दुखों का नाश करने वाले हैं। मीरा उदाहरण देते हुए कहती हैं कि जिस तरह आपने द्रोपदी की इज्जत को बचाया और साड़ी के कपडे को बढ़ाते चले गए ,जिस तरह आपने अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का शरीर धारण कर लिया और जिस तरह आपने हाथियों के राजा भगवान इंद्र के वाहन ऐरावत हाथी को मगरमच्छ के

चंगुल से बचाया था ,हे ! श्री कृष्ण उसी तरह अपनी इस दासी अर्थात् भक्त के भी सारे दुःख हर लो अर्थात् सभी दुखों का नाश कर दो।

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्होने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में , गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसन पास्यूँ, सुमरन पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ , तीनूँ बातों सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे , गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे , मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बनावँ बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ ,पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण ,दीज्यो जमनाजी रे तीरा।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर , हिवड़ो घणो अधीरा।

शब्दार्थ

स्याम - श्री कृष्ण

चाकर - नौकर

रहस्यूँ - रह कर

नित - हमेशा

दरसण - दर्शन

जागीरी -जागीर , साम्राज्य

कुंज - संकरी

पीताम्बर - पीले वस्त्र

धेनु - गाय

बारी - बगीचा

पहर - पहन कर

तीरा - किनारा

अधीरा - व्याकुल होना

व्याख्या -: इस पद में कवयित्री मीरा श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना को उजागर करते हुए कहती हैं कि हे !श्री कृष्ण मुझे अपना नौकर बना कर रखो अर्थात् मीरा किसी भी तरह श्री कृष्ण के नजदीक रहना चाहती है फिर चाहे नौकर बन कर ही क्यों न रहना पड़े। मीरा कहती हैं कि नौकर बनकर मैं बागीचा लगाऊंगी ताकि सुबह उठ कर रोज आपके दर्शन पा सकूँ। मीरा कहती हैं कि वृन्दावन की संकरी गलियों में मैं अपने स्वामी की लीलाओं का बखान करूँगी। मीरा का मानना है कि नौकर बनकर उन्हें तीन फायदे होंगे पहला - उन्हें हमेशा कृष्ण के दर्शन प्राप्त होंगे , दूसरा- उन्हें अपने प्रिय की याद नहीं सताएगी और तीसरा- उनकी भाव भक्ति का साम्राज्य बढ़ता ही जायेगा। मीरा श्री कृष्ण के रूप का बखान करते हुए कहती हैं कि उन्होंने पीले वस्त्र धारण किये हुए हैं ,सर पर मोर के पंखों

का मुकुट विराजमान है और गले में वैजन्ती फूल की माला को धारण किया हुआ है। वृन्दावन में गाय चराते हुए जब वह मोहन मुरली बजाता है तो सबका मन मोह लेता है। मीरा कहती है कि मैं बगीचों के बिच ही ऊँचे ऊँचे महल बनाऊंगी और कुसुम्बी साड़ी पहन कर अपने प्रिय के दर्शन करूँगी अर्थात् श्री कृष्ण के दर्शन के लिए साज श्रृंगार करूँगी। मीरा कहती हैं कि हे !मेरे प्रभु गिरधर स्वामी मेरा मन आपके दर्शन के लिए इतना बेचैन है कि वह सुबह का इन्तजार नहीं कर सकता। मीरा चाहती है की श्री कृष्ण आधी रात को ही जमुना नदी के किनारे उसे दर्शन दे दें।

*** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए । (केवल प्रश्न/उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना है ।)**

प्रश्न 1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

उत्तर-पहले पद में मीरा ने अपनी पीड़ा हरने की विनती इस प्रकार की है कि हे ईश्वर! जैसे आपने द्रौपदी की लाज रखी थी, गजराज को मगरमच्छ रूपी मृत्यु के मुख से बचाया था तथा भक्त प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए ही आपने नरसिंह अवतार लिया था, उसी तरह मुझे भी सांसारिक संतापों से मुक्ति दिलाते हुए अपने चरणों में जगह दीजिए।

प्रश्न 2.दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-मीरा श्री कृष्ण को सर्वस्व समर्पित कर चुकी हैं इसलिए वे केवल कृष्ण के लिए ही कार्य करना चाहती हैं। श्री कृष्ण की समीपता व दर्शन हेतु उनकी दासी बनना चाहती हैं। वे चाहती हैं दासी बनकर श्री कृष्ण के लिए बाग लगाएँ उन्हें वहाँ विहार करते हुए देखकर दर्शन सुख प्राप्त करें। वृन्दावन की कुंज गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं। इस प्रकार दासी के रूप में दर्शन, नाम स्मरण और भाव-भक्ति रूपी जागीर प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाना चाहती हैं।

प्रश्न 3.मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

उत्तर-मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का अलौकिक वर्णन किया है कि उन्होंने पीतांबर (पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं, जो उनकी शोभा को बढ़ा रहे हैं। मुकुट में मोर पंख पहने हुए हैं तथा गले में वैजयंती माला पहनी हुई है, जो उनके सौंदर्य में चार चाँद लगा रही है। वे ग्वाल-बालों के साथ गाय चराते हुए मुरली बजा रहे हैं।

प्रश्न 4.मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-मीराबाई ने अपने पदों में ब्रज, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती आदि भाषाओं का प्रयोग किया गया है। भाषा अत्यंत सहज और सुबोध है। शब्द चयन भावानुकूल है। भाषा में कोमलता, मधुरता और सरसता के गुण विद्यमान हैं। अपनी प्रेम की पीड़ा को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने अत्यंत भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग किया है। भक्ति भाव के कारण शांत रस प्रमुख है तथा प्रसाद गुण की भावाभिव्यक्ति हुई है। मीराबाई श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका हैं। वे अपने आराध्य देव से अपनी पीड़ा का हरण करने की विनती कर रही हैं। इसमें कृष्ण के प्रति श्रद्धा, भक्ति और विश्वास के भाव की अभिव्यंजना हुई है। मीराबाई की भाषा में अनेक अलंकारों जैसे अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, उदाहरण आदि अलंकारों का सफल प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 5. वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

उत्तर-मीरा श्रीकृष्ण को पाने के लिए उनकी चाकर (नौकर) बनकर चाकरी करना चाहती हैं अर्थात् उनकी सेवा करना चाहती हैं। वे उनके लिए बाग लगाकर माली बनने तथा अर्धरात्रि में यमुना-तट पर कृष्ण से मिलने व वृंदावन की कुंज-गलियों में घूम-घूमकर गोविंद की लीला का गुणगान करने को तैयार हैं।

प्रश्न 6. मीरा के जिस पद में “हिवड़ो” शब्द प्रयुक्त हुआ है, उस पद को लिखिए तथा यह भी स्पष्ट कीजिए कि “हिवड़ो” का अर्थ क्या है।

उत्तर - आधी रात प्रभु दरसण ,दीज्यो जमनाजी रे तीरा।

मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर , हिवड़ो घणो अधीरा।

अर्थात् मीरा कहती हैं कि हे ! मेरे प्रभु गिरधर स्वामी मेरा मन आपके दर्शन के लिए इतना बेचैन है कि वह सुबह का इन्तजार नहीं कर सकता। मीरा चाहती है की श्री कृष्ण आधी रात को ही जमुना नदी के किनारे उसे दर्शन दे दें। इस पद में “हिवड़ो” का अर्थ “हृदय यानि मन” से लिया गया है। “हिवड़ो घणो अधीरा” अर्थात् हृदय या मन बहुत बेचैन हो रहा है।

प्रश्न 7. लोग मीरा को बावरी कहते थे। स्पष्ट कीजिए क्यों ?

उत्तर - मीरा कृष्ण - भक्ति में अपनी सुध-बुध खो चुकी थी। उन्हें किसी परंपरा या मर्यादा का भी ध्यान नहीं रहता था। वह कृष्ण प्रेम में पागल होकर उनकी मूर्ति के सम्मुख नाचती रहती है। वह कृष्ण को अपना पति मानती थी। मीरा संतों की संगति में रहती थी। कृष्ण- भक्ति के लिए उन्होंने राज-परिवार छोड़ दिया, लोकनिंदा सही तथा मंदिरों में भजन गाए, नृत्य किया। उसके इन्हीं कार्यों के कारण लोगों ने उसकी भरपूर निंदा की,परंतु मीरा तो सब सांसारिकता को त्याग कर कृष्ण की अनन्य भक्ति में रम चुकी थी। मीरा की अनन्य कृष्ण - भक्ति की इसी पराकृष्ठा को बावलेपन की संज्ञा दी गई है। इसी कारण लोग उन्हें बावरी कहते थे।

प्रश्न 8. दूसरे पद में मीरा जी श्री कृष्ण से क्या प्रार्थना करती हैं ?

उत्तर - दूसरे पद में कवयित्री मीरा जी श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना को उजागर करते हुए कहती हैं कि हे ! श्री कृष्ण मुझे अपना नौकर बना कर रखो अर्थात् मीरा किसी भी तरह श्री कृष्ण के नजदीक रहना चाहती है फिर चाहे नौकर बन कर ही क्यों न रहना पड़े। दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण की नौकर बनने की विनती इसलिए करती है क्योंकि वह श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका खोना नहीं चाहती है। वह कहती है कि वे बगीचा लगाएँगी ताकि रोज सुबह उठते ही उन्हें श्री कृष्ण के दर्शन हो सकें।

प्रश्न 9. मीरा जी के पदों की कौन सी भाषा है ?

उत्तर - मीरा जी के पदों में राजस्थानी और बृज भाषा का मिला-जुला प्रयोग मिलता है।
